द्वितीय सत्राई स्नातकोत्तर मैथिली विभाग प्रो० सत्यनारायण झा
पत्र – 07 पटना विश्वविद्यालय

उत्तरा खण्डकाव्य

'उत्तरा' खण्डकाव्य प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' द्वारा रचित अछि। एहि खण्डकाव्यक कथावस्तु महाभारतक विराट पर्व आ द्रोण पर्वक किछु अंश सँ सम्बद्ध अछि। 'उत्तरा' एहि खण्डकाव्यक नायिका थिकीह। 'उत्तरा' राजा विराटक बेटी, बृहन्नला अर्थात अर्जुनक शिष्या, अभिमन्युक पत्नी, सुभद्रा आ अर्जुनक कुलवधू एवं गीताक प्रणेता कर्मयोगी श्री कृष्णक भगीन पुतोह थिकीह। दिनक चारित्रिक आदर्श आ महानताक संग नारी-जगतक शालीनता एवं भारतीय संस्कृति आ सभ्यताक परिवेश पर सम्पूर्ण खण्डकाव्य केन्द्रित अछि।

ई खण्डकाव्य नायिका प्रधान अछि। नायिका 'उत्तरा'क चरित्र विकासक्रममे पाण्डवक अज्ञातवास, सैरन्ध्री प्रति कीचकक कामुक दृष्टि, भीमक द्वारा कीचकक वध, पाण्डवक पता लगयबाक क्रममे राजा विराटक राज्य पर आक्रमण, पाण्डवक अज्ञातवासक रहस्योद्घाटन, अभिमन्यु आ उत्तराक परिणय, महाभारतक युद्धमे अभिमन्युक मृत्यु आ पाण्डवक शोकाकुल परिवार, 'उत्तरा'क व्यथा, श्रीकृष्ण द्वारा उत्तराकेँ कर्तव्यबोध करायब वर्णित अछि। एहि सभ घटनाक आधार पर कहल जा सकैत अछि जे उत्तरा खण्डकाव्य नायिका 'उत्तरा'क चरित्र पर आधारित अछि, तेँ एहि खण्डकाव्यक नामकरण उत्तरा यथोचित अछि।

कालशास्त्राचार्यक मतानुसार प्रबन्धकाव्य, महाकाव्य आ खण्डकाव्य मे मङ्गलाचरणक प्रयोग आवश्यक बूझल गेल अछि। एहि कारण अछि जे कवि लोकनि अपन काव्य रचनाक प्रारम्भमे अपन इष्ट-देवी-देवताक वन्दना करैत छथि जे प्रारम्भ कएल गेल कार्य निर्विघ्न समाप्त भए जाय, आ एकरे मङ्गलाचरण कहल जाइत अछि।

'उत्तरा' खण्डकाव्यक प्रारम्भ मे परम्परागत काव्य जकाँ ईष्ट-देवी-देवताक बन्दना नहि अछि। राजा विराटक मत्स्य जनपदक वैभव ओ सौन्दर्यक वर्णन सँ कथा प्रारम्भ होइत अछि जतय अज्ञातवासक अवधि मे पाण्डव आश्रय ग्रहण करैत छथि –

मत्स्य न ई, जकरा मल्लाह न्यो जाल बझाबय।
हिंसाजीवी अपन जीविका जतय चलाबय॥
ई न परस्पर भक्ष्य-भक्षकक न्याय सिखाबय।
ने भय लुब्धय एतय न्यो बन्सी-विद्ध कहाबय॥

खण्डकाव्यक लेल आवश्यक होइत अछि ओकर नायक वीर प्रशान्त ओ नायिका सुधीरा होथि। ई खण्डकाव्य नायिका प्रधान अछि। एहि खण्डकाव्यक पात्रक चरित्र-चित्रणक सम्बन्ध मे स्वयं कवि कहैत छथि —

"प्रस्तुत काव्यमे जे नायक-नायिका छथि। हिनक व्यक्तित्वक निखार महाभारतक अल्पतमे अंशमे अभिव्यक्त अछि। किन्तु ओतबे अंशमे अज्ञातवासक अन्तिम कल्प अठारह दिन व्यापी युद्धक कतिपय दिनमे जाहि रूपें चित्रित अछि ओ सर्वथा आकर्षक अछि। नायक 'अभिमन्यु'क वीरता ओ नायिका 'उत्तरा'क धीरता महाभारतीय पात्र मे हुनका लोकनिमे प्रथम पंक्तिमे जे अधिष्ठित कए गेल हो।"

ई निश्चित थिक जे अभिमन्यु चक्रव्यूहमे जाय मारल गेलाह कारण ई चक्रव्यूहक सातमे सँ छओ टा मात्र द्वारकेँ तोड़बाक व्योंत जनैत छलथि, मुदा क्षत्रियाणी उत्तरा अपन कौलिक धर्मक निर्वाह करैत अपन अल्प संयोजित पतिकेँ सहर्ष युद्ध क्षेत्रमे चक्रव्यूह बेधबा लेल बिदा करैत छथि जे हिनक अदम्य साहसक धैर्य विशिष्टता थिक।

वचन गद्गद, दृग सजल, उद्दाम प्रेमाकुल हृदय।
रण-तिलक चन्दन चढ़ाओल पतिक सिर उन्नत उभय॥
कहल पुनि कय व्यूह भेदन फिरब विजय-श्रीयुते।
तखन पुनि भुज पूजब वीर! प्रणाम अर्पित विजय ते॥
वीरताक प्रति प्रियतम, प्रियतमा वीरांगना।
बिदा कयलनि तिलक केसरिया लगाय रणांगना॥

सार्वजनिक स्थानमे अभिमन्यु अपन कौलिक धर्मक निर्वाह करैत क्षत्रियोचित कर्तव्यक पथ पर बिदा होइत छथि।

युद्धक्षेत्रमे अभिमन्यु वीर गति प्राप्त कएलाक पश्चात् उत्तरा नि:सहाय अवस्थामे रहितहुँ अपन पूर्व जीवनक गौरव अपन पातिव्रतकुल मर्यादा आदि दिश पूर्ण साकांक्ष अन्त:स्थल अभ्यक ज्वालामे सन्तप्त रहितहुँ, पाण्डवक लौकिक धर्म विवशता ओ भविष्यक आशाक कारण ई किंकर्तव्यविमूढ़ता कें ओ अनुभव करैत छलीह।

प्रकृति एवं मानवक घनिष्ठ सम्बन्ध रहल अछि। अत: प्राकृतिक पृष्ठभूमिमे मानव जीवन चित्रण बड़ रोचक आओर स्वाभाविक होइत अछि। मानवीय भावक आरोपसँ प्राकृतिक तत्वक महत्ता सिद्ध करबाक परम्परा प्रत्येक साहित्यमे रूढ़ि भए गेल अछि। मनुष्य जे किछु सोचैत अछि, करैत अछि तकर प्रेरणा प्रकृति सँ भेटैत अछि। 'उत्तरा' खण्डकाव्यमे प्रभातक चित्रणक एक दृश्य देखल जाए —

> अंत अंधकार, उषाक सुविकास।
> दिग-दिगन्तमे पसरल दिवस प्रकाश॥
>
> × × ×
>
> चंचल अंचल पवन प्रभाती मंद।
> विकसित इगदल, हसित वरद अरविंद॥

भाषा निक भावक अभिव्यक्तिक माध्यम थिक जाहिसँ सहज रूपेँ अपन मनोभिलाषित भावकेँ लोक प्रकट कए पबैत अछि। काव्यकेँ spontanious overflow of powerfull feelings. कहल गेल अछि। भावनाक तरंग जखन स्पंदित भए काव्यक रूपमे अबैत अछि तँ बान्हक सदृश भाषाक अवरोध ओ सहन नहि कए पबैत अछि आओर तेँ अभिव्यक्तिक सहज भाषाकेँ ओ अपन रचनामे अनायासहि प्रयोग कए दैत अछि। ई कथा अवश्य जे खण्डकाव्यक रचना कयलनि मूलत: संस्कृत पंडित लोकनि, तेँ सहज संस्कृतक प्रभावकेँ हुनका लौकिक रचनासँ पृथक नहि कयल जा सकैत अछि। ओ बिम्ब-प्रतिबिम्ब भावें हुनका लौकिक रचना मे रहबे करत। एकर उदाहरणस्वरूप संस्कृत प्रसिद्ध विद्वान पंडित सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 'उत्तरा'क एहि पाँतिकेँ देखल जा सकैत अछि —

> राजित राज-सभा बिच नृपति विराट, सचिव सामंत।
> भट-उद्भट, नीतिज्ञ सभासद, कथावन्त श्रीमन्त॥
> पण्डित पुरोहित, प्राश्रित कलाविंद बन्दी-मागध-वृन्द।
> जन-जनपद प्रतिनिधि, नागरिक-प्रमुख जत-जुटल अमन्द॥

एकर अतिरिक्तो जे सभ रचना खण्डकाव्य किंवा महाकाव्यक होइत रहल ताहिमे संस्कृत शब्दक बाहुल्य प्राय: एक गोट शैली बनि गेल। एहि खण्डकाव्यमे लौकिक शब्दक प्रयोग भेल अछि - यथा - दाओ-पेंच, ओरवा, खाम्ह, पुरइन, पौका, सांचो, दाबारी आदि।

डा० जयकान्त मिश्र 'उत्तरा' खण्डकाव्यक भाषा-शैलीक सन्दर्भ मे लिखैत छथि : —

" उत्तराक चरित्र बेस अमटगर पेनीसँ व्यापक विस्तृत पट पर उतारबाक चेष्टा कएल गेल अछि - अलंकार ओ सुन्दर ध्वनिक शब्दसँ भरल एक - एक शब्दक गरिमासँ सजाओल 'कृत्रिम' शैली, कठिन अर्थ ओ गतिकेँ प्राप्त शैली एहि खण्डकाव्यक गुणे कहल जाइत मुदा सहजता, प्राजंलता ओ प्रसादगुणाक अभाव बेस खटकैत अछि।"

एहि खण्डकाव्यमे महाभारतक युद्धक किछु अंश चित्रण भेल अछि। युद्धसँ की प्राप्त भेल ?, युद्ध कहियो हितकर नहि होइत छैक, संहारक परिणाम सुखद कदापि नहि भए सकैत अछि, आदि विषय पर प्रकाश देब कविक उद्देश्य बुझना जाइत अछि।

एहि प्रकारेँ कहल जा सकैत अछि जे 'उत्तरा' खण्डकाव्यमे खण्डकाव्यक विभिन्न तत्व यथा - मङ्गलाचरण हो किंवा सर्ग योजना, कथानक हो किंवा नामकरण, चरित्र-चित्रण हो किंवा वस्तु वर्णन, रसक प्रयोग हो किंवा अलंकार योजना अथवा भाषा शैली किएक नहि हो सभक समावेश भेल अछि।